सेंट एंड्रयूज स्कॉट्स सीनियर सेकेंडरी स्कूल

९वीं एवेन्यू, आई.पी.एक्सटेंशन, पटपडगंज,दिल्ली – ११००९२

सत्र: 2025-26

कक्षा:-7	विषय: हिंदी पाठ्यपुस्तक	पाठ:6

1. मौखिक कौशल

1. केशव और श्यामा भाई-बहन थे।
2. चिड़िया ने अंडे कार्निस पर दिए थे।
3. केशव ने टोकरी का सूराख बंद करने के लिए उसमें थोड़ा-सा कागज ठूँस दिया।
4. स्टूल के चारों पाये बराबर नहीं थे इसलिए जरा-सा दबाव पड़ने पर वह हिल जाता था।
5. केशव ने तीन अंडे देखे।
6. अंडे ज़मीन पर चिड़िया ने गिरा दिए थे।

2. लिखित कौशल

(क) चिड़ा और चिड़िया को देखकर केशव और श्यामा के मन में भाँति-भाँति के प्रश्न उठते- अंडे कितने बड़े होंगे? किस रंग के होंगे? कितने होंगे? उनमें से बच्चें कैसे निकल आएँगे? बच्चों के पंख कैसे निकलेंगे? घोंसला कैसा है?

(ख) चिड़िया बेचारी इतना दाना कहाँ से ला पाएगी कि सारे बच्चों का पेट भरे! यही सोचते हुए दोनों भाई-बहन के मन में यह विचार आया कि छोटे बच्चे भूख के मारे चूँ-चूँ कर मर जाएँगे।

(ग) श्यामा माँ से आँख बचाकर मटके से चावल निकाल लाई तथा केशव ने पत्थर की प्याली का तेल चुपके से ज़मीन पर गिरा दिया और उसे साफ़ करके उसमें पानी भरा। इस प्रकार दाना-पानी का इंतजाम किया गया।

(घ) टोकरी के सुराख में थोड़ा- सा कागज़ ठूँस दिया गया और टोकरी को टहनी से टिकाकर घोंसला पर आड़ कर दी गई। इस तरह से अंडों को धूप से बचने का उपाय किया गया।

(ङ) केशव ने स्टूल पर चढ़कर छज्जे पर देखा कि वहाँ थोड़े- से तिनके बिछे हुए है और उनपर अंडे पड़े हैं।

(च) धोती का टुकड़ा लेकर केशव ने उसकी कई तहें की तथा एक गद्दी बनाई। गद्दी को तिनकों पर बिछाकर तीनों अंडे धीरे से उस पर रख दिए।

(छ) श्यामा ने कमरे में आकर सूचना दी कि अंडे नीचे पड़े हैं तथा बच्चे उड़ गए।

(ज) माँ ने दोनों बच्चों को बताया कि छूने से चिड़िया के अंडे गंदे हो जाते हैं। वह फिर उन्हें नहीं सेती। यह बात सुनकर केशव को कई दिनों तक अपनी भूल का पश्चात्ताप होता रहा। वह कभी-कभी रो भी पड़ता था।

2. (क) गलत (ख) सही (ग) सही (प) सही (ङ) गलत (च) गलत

मूल्यपरक प्रश्न

1. भले ही केशव और श्यामा नादानी के कारण अंडें टूट गए परंतु अंडों की चिंता करना, छोटे छोटे बच्चों के चुग्गे का ख्याल, अंडों को हिफ़ाज़त करना आदि पक्षियों के प्रति उनकी प्रेम भावना को प्रकट करता है।

2. इस पंक्ति से यह पता चलता है कि माँ बच्चों को डाँट नहीं रही थीं बल्कि उन्हें प्यार से समझा रही थीं। कि केशव को अपनी भूल पर पछतावा हो रहा है।